नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिंदी के विर्विवाद, अतुलनीय आलोचक – प्रो. नामवर सिंह

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के चिंतन में मनोविमर्श विषय पर

नई दिल्ली में राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटित

हिंदी विवि, वर्धा, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली का संयुक्त आयोजन, शनिवार को होगा समापन

वर्धा, 11 नवंबर, 2016: भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में नई दिल्ली में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के चिंतन में मनोविमर्श विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में प्रख्यात आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

निर्विवाद रूप से हिंदी के अतुलनीय आलोचक है। उन्होंने कहा कि आचार्य शुक्ल के निबंध संग्रह चिंतामणि में उनका केंद्रीय निबंध कविता क्या है इसी पर आधारित है। कविता की परिभाषा को इतने व्यापक रूप से परिभाषित करने वाला निबंध किसी और भाषा में नहीं लिखा गया है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के लिए कविता मनुष्यता की रक्षा का कवच है।

शुक्रवार, 11 नवंबर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय संगोष्टी का उदघाटन कटवारिया सराय, नई दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रख्यात मनोवैज्ञानिक प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर प्रख्यात आलोचक प्रो. निर्मला जैन ने कहा कि आचार्य शुक्ल जी के निबंध मनोविज्ञान के क्षेत्र में साहित्य का प्रवेश कराते हैं। शुक्ल जी ने मनुष्य की मूलभूत अनुभूति सुख और दुख को विषय बनाते हुए मनोविज्ञान को उससे जोड़ा है।

अध्यक्षीय उदबोधन में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य में भावों का सांस्कृतिक मनोविज्ञान तैयार किया है। उनकी

विवेचना की परिधि व्यापक है और शुक्ल जी साहित्य की सीमारेखा से पार जाकर अपने निबंधों में भावों की सामाजिकी प्रस्तुत करते है।

उदघाटन समारोह में स्वागत वक्तव्य महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने दिया। धन्यवाद ज्ञापन लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर हिंदी विवि के पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, प्रो. अरूण कमल, प्रो. मनजीत चतुर्वेदी, प्रो. गोपेश्वर सिंह, प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. अवधेश प्रधान, हिंदी विवि के भाषा विद्यापीठ के प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी आदि सहित संगोष्ठी के सह संयोजक साहित्य विद्यापीठ, वर्धा के डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. बीर पाल सिंह यादव, हिंदी अधिकारी राजेश यादव, कमल शर्मा, राजेश आगरकर, गणमान्य नागरिक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

संगोष्ठी का समापन शनिवार को

संगोष्ठी का समापन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में 12 नवंबर को अपराह्न 3.15 बजे होगा जिसमें विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली मुख्य अतिथि होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रथम कुलपति श्री अशोक वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। इस अवसर पर प्रख्यात मनोवैज्ञानिक रमाचरण त्रिपाठी की विशिष्ट उपस्थिति रहेगी।